जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अगस्त 2023 ।। अंक – 37 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका से हीरामुनी के जीवन को मिली नई राह (पृष्ठ – 02)

सिलाई घर ने खोला रोजगार का नया द्वार (पृष्ठ – 03)

नारी अनंत जीविका महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, वैशाली (पृष्ठ – 04)

कृषि क्षेत्र में जीविका की पहल से बढ़ी दीदियों की आय

जीविका के विशिष्ट आयामों में से एक आयाम कृषि भी है। कृषि की विभिन्न गतिविधियों द्वारा जीविका दीदियों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए हैं। जीविका द्वारा दीदियों के परिवारों को कृषि कार्य हेतु नवीनतम तकनीकों की जानकारी दी जाती है एवं खेती के लिए उन्नत किस्म के बीजों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। जीविका के माध्यम से समूह से जुड़ी दीदियों को उन्नत तरीके से खेती करने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। पूर्व में दीदियों के मुख्य जीविकोपार्जन का साधन कृषि ही था। उस समय किसानों को बीज एवं खाद की उपलब्धता एक बड़ी चुनौती थी। इसके साथ ही पुरानी तकनीकों द्वारा किसान दीदियां खेती के लिए बाध्य थीं।

जीविका ने सामुदायिक संगठन के गठन के साथ हीं समुदाय स्तर की इन समस्याओं को समझा और कृषि को बढ़ावा देने तकनीकी विस्तार हेतु कार्य करना प्रारंभ किया। जीविका ने किसानों को उन्नत किस्म के धान, गेहूं, मूंग,मक्का आदि का बीज बिहार राज्य बीज निगम लिमिटेड एवं अन्य स्रोतों की मदद से जीविका संपोषित विभिन्न ग्राम संगठनों एवं स्वयं सहायता समूहों में उत्पादक कंपनी के माध्यम से बीज उपलब्ध करवाना शुरू किया। इससे किसान दीदियों को बीज की समस्याओं से छुटकारा मिला और अब दीदियाँ स्वयं के उत्पादित बीज से खेती कर रही हैं। उत्पादन को बढ़ाने हेतु जीविका ने बीज उपलब्धता के साथ–साथ आधुनिक तकनीक जैसे बीज शोधन, समय पर खाद–पानी, कीटनाशक दवाएं आदि का सही तरीके से उपयोग करवा कर खेती के लागत को कम करने में सफलता हासिल किया है। इससे जहाँ एक ओर उत्पादन बढ़ा है और वहीं दूसरी ओर वे लोग आर्थिक रूप से सशक्त भी हुए हैं। इस प्रकार जीविका ने अपने लक्षित समूहों को बीज उत्पाद तथा उन्नत तकनीक से उनके फसल उत्पादन को बढ़ाया है, साथ हीं लागत को कम भी किया है। इससे किसानों की आय लगभग दोगुनी हो गयी है। इसी क्रम मे जीविका द्वारा कई जिलों में उत्पादक समूहों एवं कंपनी का गठन कराया गया है। जीविका से जुड़ी किसान दीदियाँ एकजुट होकर खेती कर रही हैं तथा अपने उत्पाद को महिला उत्पादक कंपनियों के माध्यम से बिक्री कर उचित मूल्य प्राप्त कर रही हैं। जिससे उन्हें बिचौलियों से मुक्ति मिल रही है।

आज सभी जिलों में जीविका के माध्यम से सी.एच.सी. (कृषि यंत्र बैंक) का संचालन किया जा रहा है। इस कृषि यंत्र बैंक में ट्रैक्टर के अलावा कृषि कार्य हेतु उपयोग में आने वाले कोई अन्य यंत्र उपलब्ध हैं। ग्राम संगठन स्तर पर मिनी टूल किट बैंक की स्थापना की गई है। उक्त सभी का उपयोग दीदियाँ कृषि कार्य में करती हैं। जीविका के माध्यम से जैविक खेती को भी बढ़ावा दिया जा रहा है जिसमें बड़े पैमाने पर उन्नत तरीके से सब्जियों की खेती तथा पोषण वाटिका के माध्यम से दीदियां सालों भर सब्जियों का उत्पादन कर अपने भोजन में शामिल कर रही हैं। पोषक वाटिका के माध्यम से न सिर्फ उनका स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है बल्कि उनके बच्चे भी अब पहले के मुकाबले कम बीमार होते हैं। जो पैसा चिकित्सा में खर्च होता था, वह अब बच्चों के भविष्य निर्माण में उपयोगी हो रहा है। जीविका के विभिन्न कंपनियों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर संग्रहण केंद्र का निर्माण कराया गया है, जहाँ से दीदियाँ अपने गांव में ही उत्पादों का संग्रहण करती हैं तथा उसकी बिक्री करती हैं। इन पहलकदमियों के अलावे जीविका के माध्यम से किसान दीदियों के लिए पंचायत स्तर पर प्रशिक्षित कृषि उद्यमी के सहयोग से कृषि उद्यमी सेवा केंद्र का संचालन किया जा रहा है। जहाँ पर कृषि उद्यमी किसान दीदियों को खेती–बाड़ी से संबंधित सलाह के साथ–साथ उन्नत किस्म के खाद–बीज उपलब्ध करवाती हैं। आज जीविका दीदियाँ कृषि के माध्यम से अपने आय को बढ़ा रही हैं साथ हीं स्वरोजगार विकसित कर रही हैं। इस कार्य से वह आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त हो रही हैं।

जीविका से हीरामुनी के जीवन को मिली नई राह

विभिन्न संस्कृतियों और विरासतों की भूमि भारत विभिन्न चित्रकला शैलियों और तकनीकों का संगम है। भोजपुरी चित्रकला एक ऐसी लोक चित्रकला शैली है जो सबसे लोकप्रिय शैलियों में से एक है। भोजपुरी चित्रकला को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है। पहला कोहबर और दूसरा पिधिया पेंटिंग।

भोजपुरी चित्रकला की कोहबर शैली प्रेम और संतुष्टि का प्रतीक है। यह पारंपरिक शैली है जिसे एक नवविवाहित जोड़े के कमरे की दीवार पर चित्रित किया गया है जो शिव और पार्वती के रूपांकनों को दर्शाता है। पिधिया पेंटिंग को भोजपुरी पेंटिंग का आधुनिक रूप माना जा सकता है जिसमें प्राकृतिक पहलुओं और रोजमर्रा की जिंदगी को दर्शाया है। जिसमें मुख्य रूप से कमल का फूल, सांप, पक्षी, फूल, पत्ती, लताएं और दैनिक जीवन के दृश्य जैसे किसान फसल काटते हैं, ग्रामीण घर लौटते हैं इत्यादि गतिविधियों का चित्रण किया जाता है, इन्हीं चित्र को उकेरती है हिरामुनी दीदी। हिरामुनी दीदी लक्ष्मी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है।

हीरामुनी को बचपन से ही चित्रकारी, कला और शिल्प में रूचि थी। हीरामुनी दीदी की शादी वर्ष 2014 में भोजपुर जिला के उदवंत नगर प्रखंड स्थित सोनपुर गाँव के मिथलेश प्रसाद के साथ हुई। मिथिलेश प्रसाद भोजपुरी चित्रकला का कार्य करते थे ओर उन्होंने अपनी पत्नी हीरामुनी को भी भोजपुरी चित्रकला सिखाया। शुरुआत में दीदी अपने रिश्तेदारों की शादियों में उपहार देने के लिए भोजपुरी चित्रकारी किया करती थीं।

दीदी ने समूह की बैठक में अपनी कला के बारे में भी चर्चा की एवं उसके व्यवसायिक पक्षों से दीदियों को अवगत कराया। दीदी ने वर्ष 2018 में समूह से 18 हजार रूपये का ऋण लिया ताकि वह अपने इस कला को व्यवसाय के तौर पर आगे बढ़ा सके। ऋण प्राप्ति के बाद दीदी ने संसाधनों की व्यवस्था कर व्यवसायिक रूप से इस गतिविधि को करने लगी। दीदी अपने पति के साथ मिलकर गाँव के घर, शादी में दी जाने वाली चादर, शादी में नवविवाहित जोड़े के कमरे की दीवार, स्कूल में होने वाले समारोह में चित्रकारी करने लगी। जिससे उन्हें 4000 से 6000 रूपये तक की कमाई हर माह हो जाती है। दीदी के दो बच्चे हैं। अपने बच्चों को दीदी पेशेवरों से चित्रकारी सिखाना चाहती हैं ताकि भविष्य में वह भी मशहुर हो कर अपनी एक अलग पहचान बना सकें।

मत्स्य पालन से वंदना ने बनाई अपनी अलग पहचान

अररिया जिला के रानीगंज प्रखंड के बतौना नारायणपुर की रहने वाली वंदना देवी साल 2015 में जीविका के राधिका जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। शादी से पहले इनके मैके में महिलाएं जीविका से जुड़ी थीं। जिसकी वजह से इन्हें जीविका समूह के बारे में थोड़ी–बहुत जानकारी थी। ससुराल आने के बाद समूह निर्माण ड्राइव के दौरान वंदना भी जीविका से जुड़ गईं। समूह से जुड़ने के बाद इन्हें कई तरह की महत्वपूर्ण जानकारियां मिलीं। समूह की बैठकों में हिस्सा लेने के कारण इन्हें बचत करना, स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता के बारे में भी जानकारी मिली। इससे इन्हें काफी मदद मिली। इसके अलावा जीविका की ओर से बनाए गए मत्स्य पालन से संबंधित प्रोडूसर ग्रुप, जलपरी जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह में जुड़कर इन्होंने मछली पालन से संबंधित तकनीकी प्रशिक्षण लिया। इसके अलावा बत्तख पालन और बायोफ्लॉक विधि से मछली पालन से संबंधित सभी तकनीकी जानकारियाँ हासिल कीं, जिसका इन्हें काफी लाभ मिला। आज वह जलपरी जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह में 'मत्स्य सखी' के रूप में कार्य कर रही हैं। जिसके लिए वंदना देवी को 4 हजार रुपये मासिक मानदेय भी मिल रहा है। यह उनके और उनके परिवार के लिए सहारा है। मछली पालन से संबंधित सराहनीय कार्य के लिये वंदना दीदी को कई बार जिला प्रशासन द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। इन्हें माननीय मुख्यमंत्री, बिहार के समक्ष अपने अनुभवों को साझा करने का भी सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। अपनी जिंदगी में आए बदलावों से वंदना देवी काफी खुश हैं। जीविका से जुड़कर उनकी आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर हुई है। अब तीनों बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। महीने में पैसे मिलने के कारण अब आर्थिक परेशानी भी थोड़ी कम हुई है। घर में सास–ससुर के बीमार पड़ने पर वह उनका इलाज भी करवा पाती हैं। जिंदगी में वंदना दीदी अपनी मेहनत से और आगे बढ़ना चाहती हैं। अपनी जिंदगी में आए इस सकारात्मक बदलाव के लिए वह जीविका का दिल से धन्यवाद देती हैं।

संपूर्ण वित्तीय समावेशन के लिए कटिबद्ध है बैंक मित्र संजू

मधेपुरा जिला के उदाकिशुनगंज प्रखंड की संजु देवी की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। उनके पति दूसरे के गैरेज में दिहाड़ी मजदूरी करते थे। इस कमाई से परिवार का भरण–पोषण बेहतर तरीके से नहीं हो पा रहा था। वर्ष 2011 में संजू साधु बाबा जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ीं। स्वयं सहायता समूह में उन्हें कई तरह का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। स्वयं सहायता समूह में जुड़ने के बाद ही उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधियों की जानकारी मिली। जीविका स्वयं सहायता समूह से 25000 रूपये ऋण लेकर पति का गैराज खुलवाई। स्नातकोत्तर तक शिक्षित होने एवं समूह के बारे में जानकारी होने के कारण संजू वर्ष 2015 में बैंक मित्र के पद पर चयन हेतु संकुल स्तरीय संघ में आवेदन दिया। परीक्षा एवं साक्षात्कार के बाद उनका चयन बैंक मित्र के रूप में हुआ। उनको स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, उदाकिशुनगंज शाखा में बैंक मित्र के रूप में संकुल स्तरीय संघ के द्वारा नियोजित किया गया। उनके सहयोग से स्टेट बैंक आफ इंडिया में कुल 475 जीविका स्वयं सहायता समूह के बचत खाते खुले, जिसमें से 435 खातों का केडिट लिंकेज का प्रथम किस्त, 310 खातों का द्वितीय एवं 85 खातों का तृतीय किस्त प्राप्त हुआ है।

जीविका से जुड़कर संजु ने अपनी परिवार की स्थिति को मजबूत करने के अलावा अपने पति को स्थाई रोजगार दिलवाने में भी मदद की। वर्तमान में उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर 20000 से 25000 रूपये तक हो गयी है। संजु देवी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला रही हैं। बैंक मित्र के रूप में काम करने से इनका सामाजिक दायरा बढ़ा है। संजु देवी का कहना है कि बैंक मित्र के रूप में काम करने से अपने परिवार को सहयोग तो कर रही हैं, वहीं इस पद के कारण उनका समाज में सम्मान भी बढ़ा है।

सिलाई घर ने खोला रोजगार का नया द्वार

बेगूसराय जिला के सदर प्रखंड अंतर्गत जिनेदपुर पंचायत की रेणु देवी महज आठवीं पास हैं लेकिन अपने लगन, मेहनत एवं बुद्धिमता के कारण समाज में आज अपनी एक अलग पहचान बना चुकी हैं। विगत चार वर्षों से जीविका समूह से जुड़ी रेणु, समूह में जुड़ने के पूर्व अपने घर पर परंपरागत तरीके से सिलाई–कटाई का कार्य करती थीं। इससे उन्हें सीमित आय होती थी। पति शंकर शर्मा बढ़ई का काम करते थे। दोनों की आमदनी इतनी नहीं थी कि उनके जरूरत पूरी हो सके। जीविका से जुड़ने के बाद रेणु देवी के जीवन में कई बदलाव आया। उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई और कुछ नया करने की इच्छा फिर से जागृत हुई। रेणु ने संगीता जीविका स्वयं सहायता समूह से 70 हजार रूपये का ऋण लिया। इन पैसों का उपयोग उन्होंने आधुनिक सिलाई मशीन खरीदने में किया। आधुनिक सिलाई मशीन आने से रेणु के सिलाई–कटाई के कार्य में तेजी आई और उनकी आमदनी काफी बढ़ गयी। उन्होंने अपने घर में ही छोटा सा दुकान बना लिया। यहां पुराने मशीनों के साथ नए मशीन को स्थापित कर दिया। रेणु ने अन्य तीन दीदियों को भी सिलाई–कटाई में दक्ष कर सेवा लेने लगी।

इसी बीच सदर प्रखंड के पचंबा में जीविका द्वारा संचालित जिज्ञासा जीविका दीदी का सिलाई घर (स्टिचिंग यूनिट) की शुरूआत की गयी। रेणु देवी भी इस सिलाई घर का हिस्सा बन गयी। दिसंबर 2022 से उन्होंने स्टिचिंग यूनिट में अपनी सेवा देना प्रारंभ किया। पहले चरण में उन्हें नई एवं आधुनिक मशीनों पर कार्य करने का प्रशिक्षण स्टिचिंग यूनिट के प्रशिक्षक द्वारा दिया गया। पूरी तरह दक्ष होने के बाद जहां उन्होंने स्टिचिंग यूनिट में कपड़ा सिलने के साथ अन्य दीदियों को प्रशिक्षण भी देना शुरू कर दिया। रेणु अपने घर में सिलाई–कटाई के काम के साथ स्टिचिंग यूनिट में भी अपनी सेवा दे रही हैं। रेणु बताती हैं कि– 'आने वाले दिनों में यह स्टिचिंग यूनिट दर्जनों दीदियों के जीवन में परिवर्त्तन लाने में सफल होगा।' सिलाई घर ने दीदियों के बीच रोजगार के संभावनाओं का नया द्वार खोल दिया है।

नारी अनंत जीविका महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, वैशाली

जीविका की विकास यात्रा पिछले 16 वर्षों से निरंतर प्रगति के पथ पर जारी है। आज जीविका हर क्षेत्र में अपनी सार्थक उपस्थिति अंकित कर रही है। जीविका वित्तीय सहयोग से अपने आधारभूत जरूरतों की पूर्ति, स्वच्छता के प्रति अपनी कर्मठता, कृषि के क्षेत्र में नए–नए तकनीकों का उपयोग और ऐसे कई क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनायी है। इन सभी उपलब्धियों के उपरांत अब यह विकास यात्रा व्यावसायिक कार्यों की तरफ अग्रसित हो रही है। जीविका ने महसूस किया कि अनाज, फल एवं सब्जी के उत्पादन और बाज़ार मूल्य के अंतर को कम कर किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। इसी प्रयास में बिहार के विभिन्न जिलों में जीविका की दीदियों के द्वारा कृषि आधारित कंपनियों का निर्माण किया जा रहा है।

जीविका के इसी प्रयास का एक सशक्त और सफल प्रतीक है–नारी अनंत जीविका महिला एग्रो प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड। यह कंपनी अधिनियम 2013 के तहत पंजीकृत है। इस कंपनी का गठन नवम्बर 2018 में किया गया, जिसका कार्यालय हाजीपुर में स्थित है। गठन के साथ कंपनी कृषि के क्षेत्र में निरंतर बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज का व्यवसाय कर रही है। आरंभिक पूंजी के लिए जीविका से जुड़े 1587 सदस्यों ने पांच–पांच सौ रुपये का योगदान दिया। अंशधारक दीदियां शेयरधारक के रूप में कंपनी के फैसले में अपनी भागीदारी निभा रही हैं। कंपनी के साथ कुल 85 उत्पादक समूह और 2215 किसान जुड़े हुए हैं। कंपनी के गठन का उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना एवं उत्पादन के लिए बेहतर बाजार उपलब्ध कराने में मदद करना है। वर्त्तमान में कंपनी कृषि उत्पादक सामग्री जैसे बीज और उर्वरक की बिक्री के साथ–साथ किसानों से खाद्यान्न, सब्जियां और फल जैसे उत्पादन की खरीद करती हैं एवं विभिन्न माध्यमों से बाज़ारों में बेचती है।

प्रारंभिक वर्षों में कंपनी मात्र 10 लाख रुपये से अपना व्यवसाय शुरू किया जो आज 2.3 करोड़ के वार्षिक व्यवसाय का आंकड़ा पार कर चुकी हैं। कंपनी द्वारा जो मुख्य कार्य किये जा रहे हैं उनमें धान,गेहूं, मक्का, सब्जी का बीज इत्यादि की खरीदारी एवं बिक्री, खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट का व्यापार, जीविका दीदियों या अन्य किसानों के द्वारा उत्पादित फल, सब्जी एवं अन्य खाद्य सामग्री की खरीदारी एवं बिक्री तथा आलू का संग्रहण एवं खरीदारी प्रमुख रूप से है।

कंपनी द्वारा दाल, मसाले एवं अन्य खाद्य सामग्री जीविका दीदियों एवं अन्य किसानों से खरीदकर उसकी अच्छी तरह से छटाई एवं साफ–सफाई कर पैकेजिंग की जाती है ताकि ग्राहकों को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद मिल सके। पैक किये गए इन खाद्य सामग्रियों को इस कंपनी के द्वारा पटना में संचालित चार 'ग्रीन डिलाइट' स्टोरों के माध्यम से बेचा जाता है। ग्रीन डिलाइट स्टोर खुदरा दुकानों की एक श्रृंखला है जहां ग्राहकों को ताजी सब्जियां, फल एवं अन्य खाद्य सामग्री बेचे जा रहे हैं। वर्त्तमान में पटना में मजिस्ट्रेट कॉलोनी, प्रियदर्शिनी नगर, जलालपुर सिटी और एम्स, डॉक्टर्स कॉलोनी में चार रिटेल स्टोर्स खोले गए हैं। कई मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे मखाना, सत्तू, बेसन, शहद और लीची स्क्वैश अन्य फार्मर प्रोड्यूसर कंपनियों जैसे समस्तीपुर, पूर्णिया, नालंदा और मधुग्राम–वैशाली कृषक उत्पादक कंपनियों से एकत्र कर इन स्टोरों के माध्यम से बेचे जा रहे हैं।

क्र. सं.	वित्तीय वर्ष	वार्षिक व्यवसाय (लाख)
1	2018–19	01.18
2	2019–20	10.15
3	2020–21	20.83
4	2021–22	73.23
5	2022–23	223.48
कुल व्यवसाय		**328.87**

प्रत्येक वर्ष कंपनी का आम सभा का आयोजन ऑडिट के पश्चात किया जाता है। इस आम सभा में कंपनी के पांच सदस्यीय निदेशक मंडल के अलावा सभी शेयर धारकों के साथ वित्तीय वर्ष का लेखा–जोखा साझा किया जाता है। कंपनी ने पिछले वित्तीय वर्ष में लगभग 2.23 करोड़ रूपये का व्यवसाय किया है एवं अब तक लगभग 3.28 करोड़ रूपये का व्यवसाय पिछले पांच वित्तीय वर्षों में किया गया है।

भविष्य के लिए कंपनी का लक्ष्य अधिक से अधिक छोटे और सीमांत किसानों की आय बढ़ाने के लिए उनके उत्पादों को बाजार तक बेहतर तरीके से पहुंचाने की है। सब्जियों, मसाले, फसलों, उनके प्रसंस्कृत उत्पादों, बीज, उर्वरक, कृषि मशीनरी, परामर्श सेवाएं, कीटनाशकों के उत्पादन, विपणन एवं बिक्री को आगे बढ़ाने की है ताकि कंपनी के सदस्यों को अधिकतम लाभ पहुंचाया जा सके।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार